प्रसार शिक्षा निदेशालय
चौ.स.कृ. हि.प्र. कृषि विश्वविद्यालय,
पालमपुर - 176 062

कृषि अधिकारी कार्यशाला में रबी फसलों के लिए अनुमोदित सिफारिशें:

रबी फसलों पर कृषि अधिकारी कार्यशाला का आयोजन नवम्बर 14, 2008 को प्रसार शिक्षा निदेशालय में किया गया। इस कार्यशाला में प्रदेश के किसानों के लिए निम्नलिखित कृषि सम्बन्धी सिफारिशें अनुमोदित की गई:-

1. एच.पी.डब्लयू.-251 (आर्यन) (गेहूँ की नई प्रजाति चिह्नित):

इस किस्म का निचले तथा मध्यवर्ती पर्वतीय क्षेत्रों के बारानी व कम उर्वरता वाले इलाकों में अगेती बीजाई के लिए अनुमोदन किया गया है।मक्की की फसल की कटाई के बाद भूमि में बची नमी का सदुपयोग करने के लिए यह एक उपयुक्त किस्म है। इसे मध्य अक्तूबर तक बीज देना चाहिए। यह मध्यम ऊँचाई की किस्म है तथा तना मजबूत होने से यह तेज हवा या वर्षा से भी नहीं गिरती या झुकती है। इसकी बालियाँ लम्बी, अधिक दानों वाली, मोटी व घनी होती हैं। इसके दाने मोटे, कठोर व शर्बती रंग के होते हैं। यह समय पर तैयार हो जाती है और पकने पर झड़ती नहीं है। यह 180-190 दिनों में पककर तैयार होती है। इसकी औसत पैदावार 35 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म पीले रतुए एवं करनाल बन्ट के लिए रोग प्रतिरोधी है। इसमें प्रोटीन की मात्रा लगभग 11 प्रतिशत है।यह किस्म गेहूँ की वी. एल.-616 व एच.एस.-240 किस्मों का बदलाव है।

नोट: हिल बन्ट की रोकथाम के लिए बीज का बीजाई से पहले बैविस्टिन 2.5 ग्रा. प्रति कि.ग्रा.बीज की दर से उपचार अवश्य करें।

2. जी.पी.एफ.-2 (चने की नई प्रजाति चिह्नित):

इस किस्म का प्रदेश के समपर्वतीय निचले पर्वतीय समउष्ण कटिबन्ध खण्ड (खण्ड-1) के क्षेत्रों के लिए अनुमोदन किया गया है। इस किस्म के पौधे मध्यम सीधे, और पत्तियां गहरे हरे रंग की होती हैं। यह किस्म हिमाचल चना-1 और एच.पी.जी-17 से लगभग 10 दिन पहले 158 दिनों में पककर तैयार हो जाती हैं और यह हिमाचल चना-2 के समान्तर पकती है। इसके पौधे फलियों से भरपूर होते हैं और फलियां शाखाओं में बिल्कुल नीचे से शुरू होती हैं जोकि इस किस्म की खास विशेषता है। दाने मध्यम आकार के (100 बीज भार 16-17 ग्राम) एवं भूरे रंग के होते हैं। इस किस्म की औसत पैदावार अनुसन्धान परीक्षणों में 16-17 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा किसानों के खेतों पर 9-10 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। पकाते समय दाना गलने में कम समय लगता है और यह खाने में स्वादिष्ट है। यह किस्म उखेड़ा, जड़ गलन, झुलसा एवं घूसर फफूँद के लिए प्रतिरोधी एवं कोहरे को सहनशील है। अधिक पानी एवं हवा चलने पर भी इसके पौधे गिरते नहीं। इस किस्म की बुआई अक्तूबर के अंतिम सप्ताह तक कर देनी चाहिए।

3. भागसू (के.एल.-215) (अलसी की नई प्रजाति चिह्नित):

यह अलसी की नई किस्म है जिसको प्रदेश में उत्तेरा विधि से बीजाई के लिए चिन्हित किया गया है। इसके पौधे मध्यम लम्बाई के (57-60 सै.मी.) होते हैं। यह नीले फूलों वाली किस्म है और बीज भूरे रंग के छोटे आकार (5-7 ग्राम/1000 दाने) के होते हैं तथा यह 190-192 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। यह रतुआ, सूखा रोग व आल्टेरिया रोग के प्रति मध्यम प्रतिरोधी किस्म है। इसकी औसत पैदावार 5-6 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसके बीजों में 36.38 प्रतिशत तेल होता है।

4. गेहूँ में घास कुल के खरपतवारों की रोकथाम के लिए सिफारिश:

घास कुल के खरपतवारों के नियन्त्रण के लिये आइसोप्रोटुरान (1.25 कि. ग्रा./है.) नामक रसायन जो कि बाजार में मास्लान/ हिमएग्रीलान/ आइसोकिंग (75 डब्लयू.पी.) के नाम से उपलब्ध है का 1.7 कि.ग्रा./है. की दर से प्रयोग करें। इन रसायनों को 800 ली. पानी में घोलकर खरपतवारों में 2-3 पत्तियाँ आने पर छिड़काव करें। यह अवस्था आमतौर पर जंगली जई के अलावा सभी खरपतवारों में बुआई से 30 से 35 दिन बाद आ जाती है। जंगली जई में यह अवस्था बुआई के 20 से 25 दिन बाद आती है। लोलियम (उच्चण घास) के नियन्त्रण के लिए आइसोप्रोटुरान रसायन की मात्रा अनुमोदित मात्रा से 20 प्रतिशत कम करके तथा 0.5 प्रतिशत सेल्बट/टीपोल/सेन्डोवट सरफैक्टैंट मिलाकर छिड़काव करें।

यदि जंगली जई, लोलियम (उच्चण घास) तथा फलैरिस (कनकी) की अधिक समस्या हो तो आइसोप्रोटूरान के स्थान पर क्लोडिनाफॉप प्रोपारजिल 60 ग्रा.प्रति है. (टॉपिक 10 डब्ल्यू.पी. 600 ग्रा. या 15 डब्ल्यू.पी.400 ग्रा. प्रति है.) नामक रसायन का छिड़काव बुआई के 35 से 40 दिन बाद करें।

चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियन्त्रण के लिए 2,4-डी (सोडियम) 1.0 कि.ग्रा./है. (फरनोक्सान या बथुआ पाऊडर 80 डब्ल्यू. पी., 1.25 कि.ग्रा./है.) को समय पर की गई फसल में 30-35 दिनों के बाद छिड़काव करें। यदि फसल की बीजाई देरी से की गई हो तो यह अवस्था निचले पर्वतीय क्षेत्रों में बीजाई के 40-45 दिनों तथा मध्यवर्ती पर्वतीय क्षेत्रों में 50-55 दिनों के बाद आती है।

यदि घास व चौडी पत्ती वाले दोनों प्रकार के खरपतवारों की समस्या हो तो आइसोप्रोटुरान 1.0 कि.ग्रा./है.+ 2,4-डी (सोडियम साल्ट) 0.5 कि.ग्रा./है. के मिश्रिण (मात्रा आइसोप्रोटूरान 1.33 कि.ग्रा. + 2,4-डी 0.625 कि.ग्रा.) का फसल की बुआई के 30 से 35 दिन बाद या क्लोडिनाफॉप 60 ग्राम प्रति है. (टापिक 10 डब्ल्यू.पी. 600 ग्राम या 15 डब्ल्यू. पी. 400 ग्राम प्रति है.) बुआई के 35 से 40 दिन बाद छिड़काव करें तथा क्लोडिनाफॉप के छिड़काव के 2 से 3 दिन बाद 2,4-डी (सोडियम साल्ट) 1.0 कि. ग्रा. प्रति है. का छिड़काव करें।

गेहूँ की बुआई 15 सै. मी. की दूरी पर पंक्तियों में करने से या 22 सै.मी. दूरी पर पंक्तियों में दोनो दिशाओं मे आधा-आधा बीज और उर्वरक ड़ालने से तथा आइसोप्रोटुरान रसायन अनुमोदित मात्रा से आधी मात्रा डालने से भी खरपतवारों की रोकथाम की जा सकती है। जिन खेतों में लोलियम (उच्चण) खरपतवार की समस्या अधिक हो वहाँ पर ऊपरलिखित बीजाई के ढंग के साथ आईसोप्रोटुरान की पूरी मात्रा का प्रयोग करें।

जब गेंहूँ में तिलहनी (अलसी, सरसों एवं गोभी सरसों) एवं दलहनी (चना एवं मसर) फसलों की गेहूँ के साथ मिश्रित खेती की गई हो तो खरपतवारों का नियन्त्रण करने के लिए पैन्डिमिथालिन 1.5 कि.ग्रा. (स्टाम्प 30 ई.सी. 5.0 लीटर प्रति है.) का छिड़काव बुआई के 48 घण्टे के अन्दर करें। लेकिन जब केवल तिलहनी फसलों से मिश्रित खेती की गई हो तो आइसोप्रोटुरान 1.0 कि.ग्रा. (एरीलोन/मासलोन/ हिमएग्रोलोन/आइसोकिंग 75 डब्ल्यू.पी. 1.33 कि.ग्रा./है.) का छिड़काव खरपतवारों में 2-3 पत्ते आने पर करें।

सावधानियाँ:

1. **2,4-**डी (सोडियम साल्ट) का छिड़काव गेहूँ के पौधों में गांठे बनने की अवस्था से पहले ही करें।
2. निचले पर्वतीय क्षेत्रों में आइसोप्रोटूरान रसायन की मात्रा अनुमोदित मात्रा से **20** प्रतिशत कम करें।
3. जहां पर गेहूँ के साथ चना, मसर एवं सरसों की मिश्रित खेती हो वहाँ पर **2,4-**डी (सोडियम साल्ट) का छिड़काव न करें।
4. **2,4-**डी (सोडियम साल्ट) रसायन को क्लोडिनाफॉप रसायन के साथ मिश्रित करके प्रयोग न करें।
5. खेत में एक साल आइसोप्रोटूरान तथा दूसरे साल क्लोडिनाफॉप का बदलकर छिडकाव करने से गुल्ली ड़ण्डा एवं अन्य घास जैसे खरपतवारों की रसायनों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता कम की जा सकती है।